प्रतिदर्श प्रश्न पत्र 2021-22

विषय - हिंदी (आधार)

(विषय कोड - 302)

कक्षा – बारहवीं

अंक योजना

निर्धारित समय : 2 घंटे **अधिकतम अंक : 40 अंक**

सामान्य निर्देश :-

- अंक योजना का उद्देश्य मूल्यांकन को अधिकाधिक वस्तुनिष्ठ बनाना है|
- वर्णनात्मक प्रश्नों के अंक योजना में दिए गए उत्तर-बिंदु अंतिम नहीं हैं| ये सुझावात्मक एवं सांकेतिक हैं|
- यदि परीक्षार्थी इन सांकेतिक बिंदुओं से भिन्न, किंतु उपयुक्त उत्तर दे तो उसे अंक दिए जाएँ|
- मूल्यांकन कार्य निजी व्याख्या के अनुसार नहीं, बल्कि अंक-योजना में निर्दिष्ट निर्देशानुसार ही किया जाए|

प्रश्न संख्या	कार्यालयी हिंदी और रचनात्मक लेखन	अंक (20)
प्रश्न 1.	**किसी *एक* विषय पर लगभग 150 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए:-** भूमिका - 1 अंक विषयवस्तु - 3 अंक भाषा - 1 अंक	5x1=5
प्रश्न 2.	2 **में से किसी** 1 **विषय पर पत्र (लगभग 80-100 शब्द-सीमा)** आरंभ और अंत की औपचारिकताएँ - 1 अंक	5x1=5

	विषयवस्तु - 3 अंक भाषा - 1 अंक	
प्रश्न 3. (i)	**कहानी** गद्य साहित्य की वह सबसे अधिक रोचक एवं लोकप्रिय विधा है, जो जीवन के किसी विशेष पक्ष का मार्मिक, भावनात्मक और कलात्मक वर्णन करती है। "हिन्दी गद्य की वह विधा है जिसमे लेखक किसी घटना, पात्र अथवा समस्या का क्रमबद्ध ब्यौरा देता है, जिसे पढ़कर एक समन्वित प्रभाव उत्पन्न होता है, उसे **कहानी** कहते हैं"। ○ कथावस्तु ○ चरित्र-चित्रण ○ कथोपकथन ○ देशकाल ○ भाषा-शैली ○ उद्देश्य ***अथवा*** **अभिनय** किसी अभिनेता या अभिनेत्री के द्वारा किया जाने वाला वह कार्य है जिसके द्वारा वे किसी कथा को दर्शाते हैं, साधारणतया किसी पात्र के माध्यम से। **अभिनय** का उद्देश्य होता है किसी पद या शब्द के भाव को मुख्य अर्थ तक पहुँचा देना; अर्थात् दर्शकों या सामाजिकों के हृदय **में** भाव या अर्थ से अभिभूत करना"। **संवाद** – **नाटक में** नाटकार के पास अपनी और से कहने का अवकाश नहीं रहता। वह संवादों द्वारा ही वस्तु का उद्‌घाटन तथा पात्रों के चरित्र का विकास करता है। अतः इसके **संवाद** सरल , सुबोध , स्वभाविक तथा पात्रअनुकूल होने चाहिए।	3x1=3
प्रश्न 3. (ii)	श्रव्य माध्यम में मनुष्य की एकाग्रता सीमित होती है। ***अथवा*** चरम उत्कर्ष या क्लाइमेक्स कहानी का अंतिम तत्त्व होता है। इसमें कहानी के उद्देश्य की अभिव्यक्ति होती है। कहानी का उद्देश्य मनोरंजन के साथ साथ जीवन-संबंधी अनुभूतियों से मानव-मन का निकट परिचय कराना है।	2x1=2
प्रश्न 4. (i)	○ उल्टा पिरामिड शैली ○ इंट्रो , बॉडी और समापन	3x1=3

	अथवा **फीचर** लेखन किसी कहानी , उपन्यास की तरह ही कुछ बिंदुओं पर आधारित होता है– आरंभ, मध्य, चरम, समापन, भाषा – शैली, नेता तथा निष्कर्ष। **फीचर** लेखन का आरंभ किसी घटना, यात्रा आदि पर आधारित होता है। आरंभ में पाठक को कुछ ऐसी घटना का जिक्र करना चाहिए जिससे पूरा लेख पढ़ने की उत्सुकता पाठक के मन में बरकरार रहे।	
प्रश्न 4. (ii)	**समाचार और फीचर** में प्रमुख **अंतर** प्रस्तुतीकरण की शैली और विषयवस्तु की मात्रा का होता है। जहाँ उल्टा पिरामिड शैली में लिखा गया **समाचार** किसी विषय अथवा घटना को संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत करता है, वहीं **फीचर** उस **समाचार** को विस्तार से प्रस्तुत करता है। ***अथवा*** चार **ककार** (क्या, कब, कौन, कहाँ) सूचनात्मक व अन्तिम दो ककार (क्यों, कैसे) विवरणात्मक होते हैं।	2x1=2
प्रश्न संख्या	**पाठ्यपुस्तक आरोह भाग - 2 तथा अनुपूरक पाठ्यपुस्तक वितान भाग - 2**	**अंक (20)**
प्रश्न 5.	**निम्नलिखित 03 प्रश्नों में से किन्हीं 02 प्रश्नों के उत्तर दीजिए।**	3x2=6
(i)	राख से लीपा हुआ चौका बहुत काली सिल स्लेट पर या लाल खड़िया चाक मलना किसी की गौर झिलमिल देह का हिलना	3
(ii)	'कवितावली' में उद्धृत छंदों के अध्ययन से पता चलता है कि तुलसीदास को अपने युग की आर्थिक विषमता की अच्छी समझ है। उन्होंने समकालीन समाज का यथार्थपरक चित्रण किया है। वे समाज के विभिन्न वर्गों का वर्णन करते हैं जो कई तरह के कार्य करके अपना निर्वाह करते हैं। तुलसी दास तो यहाँ तक बताते हैं कि पेट भरने के लिए लोग गलत-सही सभी कार्य करते हैं। उनके समय में भयंकर गरीबी व बेरोजगारी थी। गरीबी के कारण लोग अपनी संतानों तक को बेच देते थे। बेरोजगारी इतनी अधिक थी कि लोगों को भीख तक नहीं मिलती थी। दरिद्रता रूपी रावण ने हर तरफ हाहाकार मचा रखा था।	3
(iii)	परदा **खोलने** से आशय है – अपने बारे **में** बताना। यदि कोई व्यक्ति किसी दूसरे	3

	की निंदा करता है या बुराई करता है। तो वह स्वयं की बुराई कर रहा है। इसीलिए शायर ने कहा कि मेरा परदा **खोलने** वाले **अपना** परदा खोल रहे हैं।	
प्रश्न 6.	**निम्नलिखित 04 प्रश्नों में से किन्हीं 03 प्रश्नों के उत्तर दीजिए।**	**3x3=9**
(i)	1. जाति प्रथा श्रम का ही विभाजन नहीं करती बल्कि यह श्रमिक को भी बाँट देती है 2. जाति प्रथा में श्रम का जो विभाजन किया गया है, वह व्यक्ति की रुचि को ध्यान में रखकर नहीं किया गया है। 3. जाति प्रथा में पेशे का निर्धारण एक मनुष्य को जीवनभर के लिए दे दिया जाता है।	3
(ii)	इस **कहानी में नमक** की पुड़िया के महत्त्वपूर्ण बनने का यह कारण है कि भारत-पाक के बीच **नमक** का व्यापार गैरकानूनी **था**। दूसरे, यह विभाजन की यादों से जुड़ी है। **कस्टम अधिकारी नमक** की पुड़िया लौटाते हुए **भावुक हो** उठा क्योंकि हर व्यक्ति को जन्मभूमि से लगाव होता है। उस प्रेम की अनुभूति से वह **भावुक हो** उठा।	3
(iii)	उनका यह **आदर्श समाज** स्वतंत्रता, समता व भ्रातृता पर आधारित होगा।	3
(iv)	पहलवान का सारा जीवन ही ढोल की आवाज़ से उठता - गिरता है, पहलवान की ढोलक पूरे गाँव में संजीवनी बूटी का कार्य करती है, ढोल की थाप से पहलवान की कुश्ती के दाँव-पेंच निश्चित होते थे।	3
प्रश्न 7.	**निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।**	3+2=5
(i)	अपनी **डायरी** में अपनी गुड़िया को वह पत्र लिखती है। गुड़िया को पत्र लिखते हुए अपरोक्ष रूप से वह खुद से **ही** बातें करती है। वह जानती है कि जिन बातों को वह लिख रही है, शायद उन्हें दूसरे व्यक्ति ठीक ढंग से न समझ पायें। इसीलिए उसे अपनी गुड़िया को **संबोधित** करते हुए पत्र लिखना पड़ा। ***अथवा*** लेखक ने सिंधु **सभ्यता** को '**लो प्रोफाइल**' **सभ्यता** कहा है। संसार के अन्य स्थानों पर खुदाई करने से राजतंत्र को प्रदर्शित करने वाले महल, धर्म की ताकत दिखाने	3x1=3

	वाले पूजा स्थल, मूर्तियाँ तथा पिरामिड मिले हैं। मोहनजोदड़ो में ऐसी कोई चीज नहीं मिली है जो राजसत्ता या धर्म के प्रभाव को दर्शाती है।	
(ii)	अकेलापन ही ऐन फ्रैंक के डायरी लेखन का कारण बना। यद्यपि वह अपने परिवार और वॉन दंपत्ति के साथ अज्ञातवास में दो वर्षों तक रही लेकिन इस दौरान किसी ने उसकी भावनाओं को समझने का प्रयास नहीं किया। पीटर यद्यपि उससे प्यार करता है लेकिन केवल दोस्त की तरह। जबकि हर किसी की शारीरिक जरूरतें होती हैं लेकिन पीटर उसकी इस ज़रूरत को नहीं समझ सका। माता-पिता और बहन ने भी कभी उसकी भावनाओं को गंभीरता से नहीं। समझी शायद इसी कारण वह डायरी लिखने लगी। ***अथवा*** इस सभ्यता को लेखक ने साधन-संपन्न माना है। इस सभ्यता ने भव्यता को महत्व नहीं दिया है। यह कलात्मकता को महत्व देती है। अतः हम कह सकते हैं कि यहाँ के लोग बोध कला में रुचि रखते थे। यहाँ की नगर व्यवस्था, पत्थर तथा धातु से बनी मूर्तियाँ, पशु-पक्षियों की आकृतियाँ, सुंदर मुहरें, खिलौने, बालों को सवारने का कंघा, गहने इत्यादि इसके सौंदर्य बोध का प्रमाण देते हैं। यहाँ पर आपको राजचिह्न या धर्म से संबंधित चिह्न नहीं मिलते हैं। यदि मिलते होते तो इसकी स्थिति बिलकुल अलग होती। यहाँ आम जनता से जुड़े चिह्न अधिक बिखरे हुए हैं। जिनका सौंदर्य बोध इसी कारण विद्यमान है। यह सभ्यता हर तरह से समाज-पोषित सभ्यता को दर्शाती है। यहाँ पर ताकत के चिह्न नहीं मिलते। यह सभ्यता आपसी समझ के कारण लंबे समय तक चली। यह आडंबर रहित है।	2x1=2